अखिल भारतीय क्षत्रिय पोवार (पंवार) महासंघ

क्षत्रिय पोवार (पंवार) समाजोत्थान संघ नागपूर - Registration No. nagpur/0000104/2022

हमारा ऐतिहासिक वजूद

हम कौन? यह प्रश्न कभी न कभी हर व्यक्ति के मन मे उभर आता है। हम सामाजिक तौर पर किसी न किसी समुदाय के एक भाग होते है। हर समुदाय के साथ उनका इतिहास जुडा होता है। इतिहास हमारे अस्तित्व को परिभाषित करता है। हमारी बोली, परम्पराये, संस्कृति, रीति, दस्तूर, खानपान, पहनावा, त्यौहार, पूजन पध्दति, देवता, सोच, सभ्यता की विशेषता हमारी पहचान की व्याख्या करते है।

हमारी भी अपनी एक विशेष पहचान है। हम लोगो की पहचान पोवार या पंवार नाम से इतिहास में दर्ज है। इतिहास के अवलोकन से पता चलता है कि हम लोग ३६ कुलो का एक क्षत्रिय सैन्य संघ है जो पश्चिमी मालवा/राजपुताना से बुंदेलखंड, बघेलखण्ड होते हुए सन १७०० के दरम्यान नागपुर जिले के रामटेक के पास नगरधन आया था। हमारे ३६ कुलो में सदियों से रक्तसबन्ध रहे है और आज तक हम हमारे रक्तसबन्ध छत्तीस कुलो में ही करते है। और इसी कारण हमारा विशिष्ट समुदाय बना हुआ है। हमारे सजातीय ३६ कुल निम्नलिखित है...

१. अम्बुले, २. कटरे, ३. कोल्हे, ४. गौतम, ५. चौहान, ६. चौधरी, ७. जैतवार,८.ठाकुर/ठाकरे, ९. टेंभरे, १०. तुरकर, ११. पटले, १२. परिहार,१३. पारधी, १४. पुन्ड, १५. बघेले, १६. बिसेन, १७. बोपचे, १८. भगत / भक्तवर्ती, १९. भैरम, २०. भोयर, २१. एडे, २२. राणा,२३. राहांगडाले, २४.रिनाईत,२५. शरणागत, २६.सहारे, २७.सोनवाने, २८. हनवते, २९.हरिणखेडे,३०. क्षीरसागर .३१ डाला ,३२ रजहांस ३३ रावत या राउत ३४ रंदीवा ३५ फरीदाले ३६ रणमत्त।

वर्तमान में अपने समुदाय में अनुक्रमांक ३२ से ३६ में लिखे कुल के लोग कही मिले नही। सम्भव है किसी दूरस्थ स्थान में मौजूद हो या अब उनके वंशज अपने साथ न हो। सम्भव है कि वे पुराने समय में ही मालवा या बुंदेलखंड वापस हो चुके हो। बस उनका नाम रह गया हो।

भारत मे अनेकों भाषाएं व बोलिया है। हमारे समुदाय की अपनी एक विशेष बोली है जिसे पोवारी कहा गया है। जॉर्ज अब्राहम गियरसन द्वारा किये गये भारत के पहले भाषा सर्वे में पोवारी बोली का उल्लेख मिलता है। अपनी स्वतंत्र व निजी बोली होना हमारे लिए गर्व की बात है। यह बोली हमारी पहचान भी है।

हमारा इतिहास हमें हमारी वंशावली की पोथियों से प्राप्त होता है जो रतलाम के श्री. बाबूलाल भाट के परिवार द्वारा लिखी गयी है। उसी प्रकार हमारा इतिहास ब्रिटिश गज़ेटियर, एथोनोलोजीकल रिपोर्ट्स, इतिहास की किताबे, १८६६ से शुरू हुई भारतीय जनगणनाओ से प्राप्त होता है। हमारे पंवारो के इतिहास के बारे में बहुत कुछ लिखा हुआ मिलता है क्योंकि पंवार या पोवार इतिहास में एक विशेष कौम रही जिसका भारत में काफी लंबे समय तक प्रभुत्व रहा है। सन १३०० के बाद पंवारो का शक्तिशाली शासन भले ही समाप्त हो गया हो परन्तु सन १३०० के पहले करीब १७०० साल तक राजपुताना व मालवा में पंवारो का शासन रहा है।

हम एक प्रकार से देखा जाए तो अत्यंत प्राचीन संस्कृति के संवाहक है। हमारे समुदाय में अग्नि का बड़ा महत्व है। हमारे हर पूजा में अग्नि को नैवेद्य दी जाती है। खाना खाते समय हम अग्नि को अन्न का नैवेद्य अर्पण करते है। आज भी गाव में चूल्हे की पूजा होती है। इतिहास में हमे अग्निवंशीय कहा गया है यह एक ध्यान देने योग्य बात है।

इतिहासकार जैसे श्री. दशरथ शर्मा, श्री. सी व्ही वैद्य, श्री कोटा वेंकटाचेलम आदि पंवारो को ब्रम्हक्षत्र कहते है। यानी ब्राम्हण जो धर्म रक्षणार्थ क्षत्रिय बन गए। राजा भोज के चाचा राजा मुंज के दरबारी कवि हाल द्वारा लिखित पिंगलसूत्रवृत्ति में वे कवि राजा मुंज को ब्रम्हक्षत्र कहते है।

हमारी पोथियों की वंशावली में सप्त ऋषि हमारे पूर्वज होने की बात लिखी मिलती है। वही दूसरी ओर कुछ इतिहासकार अग्निवंशी पंवारो को प्राचीन पर्शिया या आजके ईरान, ग्रीस से आये लोग कहते है जो भारत मे बस गये। परन्तु भारत के प्राचीन ग्रंथों की माने तो पंवार मूलतः सिंधु नदी के क्षेत्र के पुराने रहिवासी है जो मारवाड़ , राजपुताना व मालवा में करीब २५०० साल पहले

अखिल भारतीय क्षत्रिय पोवार (पंवार) महासंघ

क्षत्रिय पोवार (पंवार) समाजोत्थान संघ नागपूर - Registration No. nagpur/0000104/2022

स्थायी हो गए थे। लगातार युद्ध अभियानों व विविध क्षेत्रो पर शासन के कारण पंवार समस्त उत्तर भारत , नेपाल , अफगानिस्थान , पाकिस्थान में मौजूद पाये जाते है। पंवारो के अलग अलग समूहोमें मध्य भारत मे हमारा एकसंघ ३६ कुल क्षत्रिय पंवार समुह सबसे बड़ा है।

पोवारो की पोथियों के अवलोकन से पता चलता है कि पंडित या भाट लोग पोवारो को परमार कहते थे। ऐतहासिक साहित्य में पंवारो व परमारो पर काफी कुछ लिखा गया है। कहावतें प्रसिध्द है। राजपुताना में पिरथी बड़ा पंवार , पिरथी तणी पंवार जैसी कहावत का होना दर्शाता है की एक समय मे पंवारो के अधिपत्य में बहुत बड़ा साम्राज्य था। अपने वजूद पर, अपनी अस्मिता पर लड़ मरने वाले पंवारो कि गाथाएं, सोरठे, ख्यात प्रसिध्द थे जो अब समय के साथ गुमनामी के अंधेरे में लुप्त हो रहे है। इतिहासकार कहते है कि ब्रज क्षेत्र, गढ़वाल में जो पंवारा गाते थे यह पंवार क्षत्रिय वीरों की गाथाएं ही थी। कर्नल जेम्स टॉड द्वारा राजपूताने पर लिखी पुरानी किताब एनल्स एंड एंटीक्विटिज ऑफ राजस्थान में पोवारो का उल्लेख आता है। राजस्थान के ब्रिटिश रेकॉर्ड में अनेक सन्दर्भो में पोवारो का उल्लेख पाया जाता है। पंवार एक उत्तम व वीर जाती निश्चित तौर पर कही गयी है।

उन उत्तम वीरों के उत्तराधिकारियों का यह समूह आज भी अपने मूल स्वरूप यानी ३६ कुलो में मध्य भारत के बालाघाट, सिवनी, गोंदिया व भंडारा इन चार जिलों में बसा हुआ पाया जाता है। नागपुर ज़िले में सिर्फ़ दो गाव है। बाकी देश विदेश के शहरों में जो पोवार या पंवार पाये जाते है, वे नौकरी व अन्य व्यवसाय के लिए अपने चार जिलों से गए हुए ३६ कुल पोवार ही है।

अगर हम प्राचीन इतिहास से सबंधित पंवारो की बात करे तो पंवार पोवार या परमार दरअसल भारत, पाकीस्थान, नेपाल व अफगानिस्थान में पाए जाते है। पर ये पंवार अन्य जातियों व धर्मो में समाहित पाए जाते है। इन लोगो का अब हमसे सबन्ध नही रहा। और अब इनसे हम पारिवारिक रूपसे जुड़ भी नही सकते क्योंकि वे मूलतः कौन है , क्या है , कैसे है यह जानना कठिन हो जाता है। नामो की समानता से भी अब किसी को अपने से प्राचीन रूप वांशिक रूपसे सबन्धित है ऐसा नही कह सकते। इसलिए यही अच्छा है कि अब हम हमारे अपने विशेष ३६ कुलो के समुह को अपना समुदाय मानकर उसको मूल स्वरूप में बनाये रखे। अपने संस्कृति का जतन करे। अपनी पहचान बनाये रखे।

अपने ३६ कुल पंवार या पोवार समुदाय के मजबूत, संरक्षित, सांस्कृतिक व विकसित अस्तित्व के लिए आपस मे एकता बनाये रखना अति आवश्यक है।

अपने अपने कर्म से समाज के सर्वांगीण व सम्मिलित विकास को सुनिश्चित करना हम सबका परम कर्तव्य है।

संघठन एक शक्ति है और हम संघठित होकर अपने वजूद के लिए एकदूसरे से जुड़े रहे यही समय की मांग है।

अखिल भारतीय क्षत्रिय पोवार (पंवार) महासंघ के इस दूसरे अधिवेशन में उपस्थिति देकर हमारा हौसला बढ़ाने के लिए आपका मनःपूर्वक धन्यवाद...

प्रेषक

समस्त कार्यकारिणी मंडल
अखिल भारतीय क्षत्रिय पोवार (पंवार)
महासंघ भारत

अखिल भारतीय क्षत्रिय पोवार (पंवार) महासंघ

क्षत्रिय पोवार (पंवार) समाजोत्थान संघ नागपूर - Registration No. nagpur/0000104/2022

जय सियाराम

महासंघ के उद्देश्य तथा कार्य

- भारत में फैले ३६ कुल पोवार (पंवार) समाज जनों में संपर्क स्थापित कर एकता के सूत्र में बांधना तथा राष्ट्रीय स्तर पर एकता को मजबूत करना।
- क्षत्रिय पोवार (पंवार) समाज की सामाजिक, शैक्षणिक, आर्थिक एवं समग्र विकास में सहायता प्रदान करना।
- क्षत्रिय पोवार (पंवार) समाज की बोली जानेवाली माय बोली पोवारी के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए कार्य करना ।
- पोवारी बोली के साहित्य को समृद्ध करना, आम जनमानस तक इसका प्रचार प्रसार करना ।
- पोवार समाज के सांस्कृतिक रीति-रिवाज, सभ्य प्रथाओं एवं नैतिक मूल्यों को सुरक्षा प्रदान करना।
- सामाजिक कुरीतियों का उन्मूलन कर, जनजागृति के माध्यम से सुदूरवर्ती प्रसार प्रचार करना।
- समाज के युवा एवं महिला वर्ग में शिक्षा का प्रसार करना एवं विविध योजनाओं तथा कौशल विकास पर मार्गदर्शन कर उनको संबल बनाना।
- किसानों की खुशाली हेतु कृषि विकास की विभिन्न योजनाओ पर आधारित कार्यक्रम क्रियान्वित करना ।
- पोवारी लोककला और साहित्य संवर्धन के लिए विभिन्न पंवार बहुल स्थलों पर अधिवेशनों का आयोजन करना ।
- पोवार समाज की विलुप्त हो रही संस्कृति को समृद्ध तथा सुरक्षा प्रदान करना।
- समाज से सबंधित ऐतिहासिक तथ्यों पर खोज कर समाज के विभिन्न स्तरों पर स्थानीय संघटनो की मदद से प्रसार प्रचार करना।
- पोवार (पंवार) समाज के युवक-युवतियों में सामाजिक शिक्षा का प्रचार प्रसार कर पोवारी संस्कारों से परिपूर्ण करना।
- समाज के उत्थान हेतु अधारभूत संरचनाओं का विकास करना ।
- समाज के हर वर्ग के कल्याण हेतु प्रशासन के सहयोग से विभिन्न कार्यक्रमों को संचालित करना।
- पोवार समाज के जातिनाम पोवार (पंवार) के अपभ्रंश को रोकना तथा पोवार पंवार मूल रूप को स्थायित्व प्रदान करना.
- पोवार समाज मे नैतिक मूल्यों तथा समता भाव को प्रोत्साहित करना ।
- पाश्चात्य संस्कृति से न्हास होते संस्कारों को सहेजना ।
- स्थानीय स्तर पर सामाजिक समितियों का गठन कर जनजागृति एवं प्रचार प्रसार करना ।
- समाज के वरिष्ठजनो का सत्कार कर उनको मानसिक संबल प्रदान करना।
- समाज के विशिष्ट सेवा क्षेत्रो में कार्यरत समाजसेवीयो का आदर सत्कार कर सामाजिक कार्य हेतु प्रेरित करना ।
- सामाजिक विकास हेतु साहित्यों के निर्माण एवं सरक्षण हेतु ई बुक, सॉफ्ट एवं हार्ड कॉपी, सामाजिक पत्रिकाओं का प्रकाशन तुा वेब मीडिया द्वारा ऑनलाइन सेमिनारो का आयोजन करना ।
- समाज के गरीब एवं होनहार विद्यार्थियों की आर्थिक कठिनाईयों को दूर करने हेतु उपाययोजना करना ।
- शिष्यवृत्ती, पारितोषिक, एवं शिक्षा ऋण संबंधी सरकारी योजनाओं की जानकारियां प्रदान करना।
- उच्च शिक्षा के लिए प्रयासरत आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों के लिए महानगरों में रहने की व्यवस्था करना। मालवा राजपुताना से अठारवीं सदी में नगरधन होकर वैनगंगा क्षेत्र में बसे छत्तीस कुर के क्षत्रियों का संघ अखिल भारतीय क्षत्रिय पोवार (पंवार) महासंघ

प्रेषक

समस्त कार्यकारिणी मंडल
अखिल भारतीय क्षत्रिय पोवार (पंवार)
महासंघ भारत

पोवारी
संस्कृति महान

बसी से भाऊ सबको कंठ जबान,
लहान मोठा करसेती जेको मान ।।

जेको लक जुड़ी से संस्कृति ज्ञान,
निभाव सेती सब परंपरा महान ।।

दया करुणा प्रेम रस की से खान,
समाज संगठन को देसे जो ज्ञान ।।

पोवारी त्योहार की बात महान,
विक्रमादित्य राजा भोज महान ।।

माय गढ़कालिका को से वरदान,
पोवारी संस्कार संस्कृति महान ।।

देश की रक्षा अन्नं दाता को ज्ञान,
पोवार/पँवार बेटा बेटी महान ।।

शिक्षा क्षेत्र मा से बहुत योगदान,
कर्तव्य निष्ठा नौकरी की शान ।।

देश विकास मा मोल को योगदान,
क्षत्रिय धर्म लक बनसे बलवान ।।

प्रा. डॉ. हरगोविंद चिखलु टेंभरे
मु.पो.दासगाँव ता.जि. गोंदिया
मो.९६७३१७८४२४

पोवारी
स्वाभिमान
निज पहचान पर गर्व से स्वाभिमान,
निज सम्मान की रक्षा से स्वाभिमान ।
पहचान लक नहाजन हमी अनजान,
काय लाई सोडबीन आपरी पहचान।
गर्व से हमला आपरो पुरखा इन पर,
कसो मुरायबीन येला नवो नाव धर ।
सुवारथ को कारन कसो बिके आन,
नही मिट सिकसे आपरो स्वाभिमान ।
आपरी विरासत से पोवारी अस्मिता,
पूजनीय से या जसो माता अन् पिता ।
त्याग बलिदान की कृति स्वाभिमान,
कसो सोडबी हमरो समाज को मान ।
जागो जागो ऊभो होनकी आई बेरा,
नाव मिटान वारो ला नोको देव डेरा।
आमरो पुरखा इनको नाव से धरोहर,
जगानो से पोवारी स्वाभिमान घर घर ।
ऋषि बिसेन (IRS)

होये समृद्ध पोवारी

मोरा पोवार पुरखा
आया होता मालवालं ।
सब घरं पोवारीमा
सुरू होती बोलचालं ।।१।।

खेड़ा पाड़ा मा सप्पाई
होता बोलत पोवारी ।
भाली, खाती ना बढ़ई
गोंड रव्हंका गोवारी ।।२।।

मुख्य धंदा खेतीबाड़ी
चक्र जीवनको चलं ।
शहरको चक्कर मा
बोली बोलनला खलं ।।३।।

भयी मायबोली कम
धीरू धीरू मोठोआंग ।
हिंदी मराठीमा लग्या
बोलनला नहानांग ।।४।।

होत होती लुप्तप्राय
मायबोली पोवार की ।
होन बसी लिपीबध्द
आता संस्कृती धार की ।।५।।

होये समृद्ध पोवारी
गया दिन लाचारी का ।
भरे साहित्यलं ढोला
मायबोली पोवारी का ।।६।।

मोरो छत्तीस कुरकी
होये खरी पयचान ।
लिख कविता करू मी
पोवारीको गुनगान ।।७।।

इंजी. गोवर्धन बिसेन ‘‘गोकुल’’
गोंदिया (महाराष्ट्र)
मो. नं. ९४२२८३२९४१

बोली छत्तीस कुऱ्याकी

बोली छत्तीस कुऱ्याकी
आय आमरी पोवारी ।
बैनगंगा आँचलमा
फली फुलीसे या न्यारी ।।१।।

आमी पोवार वंशका
सच्चा वीर वारकरी ।
जरी आया मालवालं
कोंब अलग आमरी ।।२।।

नोको तुमी मिसरावो
पोवारीमा वा भोयरी ।
मिटे अस्तित्व दुयीको
नोको जमावो सोयरी ।।३।।

करो दुयी बोलीसाती
तुमी अलग लिखान ।
नोको मिटकावो तुमी
पोवारीकी पयचान ।।४।।

करो अलग अलग
रीती रिवाज जतन ।
दुयी मायबोली साती
करो अलग सृजन ।।५।।

मायबोली पोवारीको
करो तुमी संवर्धन ।
करं बिनती तुमला
हात जोड़ गोवर्धन ।।६।।

अखिल भारतीय क्षत्रिय पोवार (पंवार) महासंघ

क्षत्रिय पोवार (पंवार) समाजोत्थान संघ नागपूर - Registration No. nagpur/0000104/2022

महासंघ द्वारा भविष्य में अंमल होनेवाले ठरावोंका प्रस्तुतीकरण

अखिल भारतीय क्षत्रिय पोवार (पंवार) महासंघ, राष्ट्रीय संघठन, द्वारा आज दिनांक ३ फरवरी २०२४ रोज शनिवार को आयोजित राष्ट्रीय अधिवेशन में ३६ कुल सजातीय परिवारों के संबंध में मध्यभारत के मुख्य रूप से चार जिलों में निवासरत/बसे पोवार (पंवार) परिजनों के हितसम्बन्ध में निम्नलिखित ठराव पारित किए जा रहे है !

मध्यभारत में हमारे समुदाय के मात्र ३६ कुल है (अब शेष ३१ कुल) जिनकी संस्कृति, बोली, परम्परा, रीति रिवाज संस्कृति पूर्वजो के समयकाल से समान है जिसके कारण हम एक जाति के रूप में पहचाने जाते है और भविष्य में भी अपनी मूल पहचान को यथासंभव प्रयत्नों से कायम रखेंगे।

पुराने रेकॉर्ड्स में हमारी जाति का नाम पंवार / पोवार / परमार / पंवार आदि लिखा गया है।

भारत के पहले भाषा सर्वेके अनुसार समाज की भाषा का नाम पोवारी है।

हमारा समुदाय सदियों से साथ-साथ रहा है और ३६ में से किन्ही दो भिन्न कुल में विवाह होते आये है, जिनको सजातीय विवाह कहा गया है।

हमारे पोवार (पंवार) जाति के कुल इस प्रकार है - १. अम्बुले २. कटरे (महाराष्ट्र में देशमुख उपाधि) ३. कोल्हे ४. गौतम ५. चौहान ६. चौधरी ७. जैतवार ८.ठाकुर/ठाकरे ९. टेंभरे, १०. तुरकर ११. पटले (मध्यप्रदेश में देशमुख उपाधि) १२. परिहार १३. पारधी १४. पुन्ड १५. बघेले १६. बिसेन १७. बोपचे १८. भगत / भक्तवर्ती १९. भैरम २०. भोयर २१. एडे २२. राणा २३. राहांगडाले २४.रिनायत २५. शरणागत २६.सहारे २७.सोनवाने २८. हनवत २९.हरिणखेडे ३०. क्षीरसागर .३१ डाला ३२ रजहांस ३३ रावत या राउत ३४ रंदीवा ३५ फरीदाले ३६ रणमत।

पंवार लोग चार देशो में विभिन्न जातियों एवं धर्मों में पाए जाते है। हम अन्य पंवारो, समस्त क्षत्रिय व भारतीय समुदायो का सन्मान करते है व उनके प्रति आदर व एकता का भाव रखते है।

हम किसी प्रकार से अन्य जाति के साथ विलिनीकरन/एकीकरण या पुरातन जातीनाम में बदलाव को खारिज करते है, क्योंकि जाति एकीकरण/विलीनीकरण या जातिनाम में कोई भी बदलाव कानूनन सम्भव नही है।

हम सबकी जाति वही रहेगी जो हमारे दादा परदादा की पहले से चली आ रही है।

जाति विलिनीकरन के किसी भी प्रस्ताव को महासंघ मंजूरी नही देता है, ना ही ऐसे किन्ही प्रस्ताव का भविष्य में समर्थन करेगा।

प्रेषक

अखिल भारतीय क्षत्रिय पोवार (पंवार)
महासंघ अधिवेशन के अध्यक्ष

पोवार की बोली

नदी की धार को आवाज से पोवार की बोली
सनातन धर्म को आगाज से पोवार की बोली
बड़ी ममताभरी मीठी सहद को स्वाद पोवारी
समरमा शौर्य को अंदाज से पोवार की बोली ।।१।।

तपस्या को नवो परवान से पोवार की बोली
महेश्वर की दया, वरदान से पोवार की बोली
रकत रगमा बव्हं से राजशाही को पुरातन लक
स्वयं या वीर को अभिमान से पोवार की बोली ।।२।।

सही इंसान की दरकार से पोवार की बोली
करे भवपार वा पतवार से पोवार की बोली
सहन ना कर सिकं पोवार कोनी को अनादरला
अधम को वक्ष पर तलवार से पोवार की बोली ।।३।।

सभी को मान ना सम्मान से पोवार की बोली
खुशी लक झांकतो भगवान से पोवार की बोली
गुथी से एकता को सुत्रमा फुलमाल मानवता
धरापर प्रेम को सोपान से पोवार की बोली ।।४।।

सलोनो नंद को घनश्याम से पोवार की बोली
दिसे जो कर्म को परिणाम से पोवार की बोली
महाकाव्यों पुराणों वेद येकोमा दरस देये
बिराजे जीभपर श्रीराम से पोवार की बोली ।।५।।

डॉ. प्रल्हाद हरिणखेडे 'प्रहरी'
डोंगरगांव/ उलवे, नवी मुंबई
मो. ९८६९९९३९०७